

डॉ. जिम स्पीगल, धर्म का दर्शन, सत्र 5, आस्तिक तर्क, भाग 4, आस्तिक विश्वास का व्यावहारिक औचित्य

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 5, आस्तिक तर्क, भाग 4, आस्तिक विश्वास का व्यावहारिक औचित्य है।

ठीक है, अब तक, हमने ईश्वर के लिए कई तर्कों को देखा है जो साक्ष्य-आधारित हैं, चाहे हम अनुभवजन्य साक्ष्य के बारे में बात कर रहे हों या, ऑन्टोलॉजिकल तर्क के मामले में, ईश्वर के लिए एक तरह का पूर्व-प्रामाणिक साक्ष्य या वैचारिक साक्ष्य।

आस्तिक विश्वास के लिए तर्कों की एक और श्रेणी है, जो प्रकृति में अधिक व्यावहारिक या विवेकपूर्ण है, जो तर्क देते हैं कि ईश्वर के पक्ष और विपक्ष में सबूतों के संबंध में जो भी स्थिति हो, ईश्वर में विश्वास करना और उस विश्वास के आधार पर अपना जीवन जीना व्यावहारिक रूप से बुद्धिमानी या तर्कसंगत बात है। तो, हम आस्तिक विश्वास के लिए इन व्यावहारिक औचित्यों में से कुछ पर नज़र डालेंगे। तो, आइए 19वीं सदी के उत्तरार्ध के विचारक विलियम क्लिफोर्ड द्वारा किए गए दावे पर विचार करके शुरू करें।

उन्होंने दावा किया कि जिस तरह हमारे आचरण के मामले में हमारी नैतिक ज़िम्मेदारियाँ हैं, उसी तरह हमारे विश्वासों के मामले में भी हमारी नैतिक ज़िम्मेदारियाँ हैं। और इसलिए, उन्होंने इस बारे में सोचने के लिए एक बुनियादी दिशा-निर्देश प्रस्तावित किया कि किस तरह के विश्वास तर्कसंगत और नैतिक रूप से ज़िम्मेदार हैं। इसलिए, उन्होंने यह सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसे क्लिफोर्ड के सिद्धांत के रूप में जाना जाता है, कि यह हमेशा हर जगह गलत होता है और किसी को भी अपर्याप्त सबूत के आधार पर किसी भी चीज़ पर विश्वास करना चाहिए।

विलियम क्लिफोर्ड के अनुसार, यह एक बुनियादी कर्तव्य और जिम्मेदारी है कि हम तर्कसंगत प्राणी होने के नाते केवल उन्हीं बातों पर विश्वास करें जिन पर हम पर्याप्त सबूतों के आधार पर विश्वास करते हैं। तो, क्या यह सिद्धांत सही है? अब, पहली नज़र में, यह पूरी तरह से तर्कसंगत सिद्धांत लगता है और ऐसा कुछ है जिसका हम सभी को पालन करने का प्रयास करना चाहिए। हाँ, कौन नहीं चाहेगा कि उसकी मान्यताएँ अच्छे सबूतों पर आधारित हों? और शायद यह हमारी सभी मान्यताओं के लिए मानक होना चाहिए।

अब, क्लिफोर्ड सहित कई धार्मिक संशयवादियों ने सोचा कि अगर हम पुष्टि करते हैं कि यह तर्कसंगत विश्वास का एक बुनियादी सिद्धांत है, तो आपको अपने सभी विश्वासों के लिए पर्याप्त सबूत होने चाहिए, और यह धार्मिक आस्तिक के लिए समस्याएँ पैदा करने वाला है। इसलिए, उन्होंने और कई अन्य धार्मिक संशयवादियों ने इस सिद्धांत पर आस्तिकता की अपनी आलोचनाएँ आधारित कीं और जोर देकर कहा कि ईश्वर में विश्वास हमेशा तर्कहीन होता है

क्योंकि ईश्वर में विश्वास करने के लिए हमेशा अपर्याप्त सबूत होते हैं। हालाँकि, कई विद्वानों ने क्लिफोर्ड के सिद्धांत को इस आधार पर चुनौती दी है कि यह वास्तव में आत्म-खंडन करने वाला है।

और इस अर्थ में, क्या क्लिफोर्ड के सिद्धांत पर विश्वास करने के लिए वास्तव में पर्याप्त सबूत हैं? क्लिफोर्ड के सिद्धांत के लिए कोई किस तरह का सबूत दे सकता है? क्या यह मानने के लिए पर्याप्त सबूत हैं कि किसी को हमेशा, और हर मामले में, केवल पर्याप्त सबूत के आधार पर ही विश्वास करना चाहिए? तो, विडंबना यह है कि शायद क्लिफोर्ड का सिद्धांत अपनी मांग को भी पूरा नहीं करता है। और मुझे लगता है कि उस आपत्ति में कुछ है। दूसरों ने यह दिखाने की कोशिश की है कि धार्मिक विश्वास तर्कसंगत हो सकता है ; विशेष रूप से, धार्मिक विश्वास गैर-साक्ष्य या व्यावहारिक कारणों से तर्कसंगत हो सकता है।

और उन विचारकों में से दो हैं ब्लेज़ पास्कल और विलियम जेम्स। और हम पहले पास्कल के बारे में बात करेंगे। वह 17वीं सदी में रहने वाले एक गणितज्ञ थे, जिनकी मृत्यु बहुत कम उम्र में हुई थी, जबकि वह वास्तव में एक ऐसी रचना तैयार कर रहे थे जो क्षमाप्रार्थी की महान कृति बन सकती थी।

उन्होंने सैकड़ों पत्रों के नोट्स इकट्ठे किए थे, जो बेहद दिलचस्प और व्यावहारिक अवलोकन थे जो उन्होंने मानव स्वभाव के सभी पहलुओं के साथ-साथ धार्मिक विश्वास के बारे में किए थे। जब उनकी मृत्यु हुई, तो उन कागज़ात और नोट्स को एकत्र किया गया, और उनका शीर्षक था विचार, पास्कल की नब्ज़। अपनी नब्ज़ में, एक बिंदु पर, उन्होंने वह विकसित किया जो ईश्वर में विश्वास के लिए दांव तर्क के रूप में जाना जाता है।

तो, वह यह कहते हुए शुरू करता है कि यह किसी व्यक्ति को लग सकता है कि ईश्वर के लिए सबूत वास्तव में किसी भी तरह से निर्णायक नहीं है, है न? अगर यह अनिर्णायक है, अगर यह अनिर्णायक है, मान लें कि अगर ऐसा लगता है कि ईश्वर के होने की 50% संभावना है, तो कुछ सबूत हैं, लेकिन ईश्वर के खिलाफ भी कुछ सबूत हैं, है न? आपके पास ये तर्क हैं जिनके बारे में हमने बात की है; ब्रह्माण्ड संबंधी, उद्देश्य संबंधी और सत्ता संबंधी तर्क ईश्वर के लिए कुछ सबूत दे सकते हैं। और आपके पास बुराई की समस्या है, ईश्वरीय गुप्तता की समस्या है, ऐसी चीजें जिन्हें हम समझा नहीं सकते हैं जो प्रति-साक्ष्य प्रदान करती हैं। क्या होगा अगर हम किसी भी तरह से यह निष्कर्ष निकालने में असमर्थ हैं कि ईश्वर मौजूद है या नहीं? हमें क्या करना चाहिए? उस स्थिति में, पास्कल कहते हैं, आपको एक शर्त लगाने की ज़रूरत है, है न? आपको अपनी शर्त लगाने की ज़रूरत है।

क्या आप अपना दांव भगवान के घोड़े पर लगाएंगे या भगवान नहीं वाले घोड़े पर? खैर, अंत में उनमें से एक जीतने वाला है। या तो भगवान है, या नहीं है। पास्कल के अनुसार, तर्कसंगत कदम, विवेकपूर्ण या व्यावहारिक रूप से तर्कसंगत कदम, स्पष्ट रूप से भगवान पर दांव लगाना है।

अब, चूंकि या तो ईश्वर मौजूद है या ईश्वर मौजूद नहीं है, और हम मान सकते हैं कि वह मौजूद है या नहीं, हमारे पास यहाँ चार संभावनाएँ हैं जिन्हें मैं यहाँ एक तालिका के साथ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

हम मान सकते हैं कि ईश्वर मौजूद है और सही या गलत हो सकता है। यदि आप मानते हैं कि ईश्वर मौजूद है और संभवतः उसी के अनुसार जीवन जीते हैं, तो ऐसा लगता है कि वह इसे हल्के में ले रहा है, कि यदि आप दृढ़ता से विश्वास करते हैं या इस विश्वास के लिए खुद को प्रतिबद्ध करते हैं, तो आप एक ऐसे तरीके से जीने जा रहे हैं जो ईश्वर का सम्मान करता है, जहाँ तक आप समझ सकते हैं कि इसका क्या मतलब है।

अगर आप मानते हैं कि ईश्वर का अस्तित्व है और ईश्वर का अस्तित्व है, तो अगले जन्म में आपको स्वर्ग में अनंत आनंद का जीवन मिलेगा, यानी अनंत सुख। यही परिणाम है। यही परिणाम है, उन लोगों की धन्य स्थिति जो ईश्वर के अस्तित्व के बारे में विश्वास करते हैं और सही हैं।

या फिर आप यह मान सकते हैं कि ईश्वर का अस्तित्व है, और बाद में पता चलता है कि आप गलत हैं। अगर ईश्वर का अस्तित्व नहीं है तो इसका क्या परिणाम होगा? खैर, अंत में, जब आप मर जाते हैं, तो आपकी चेतना समाप्त हो जाती है। अब आपका अस्तित्व नहीं है।

आप गायब हो जाते हैं, और आपका जीवन पूरी तरह से खत्म हो जाता है। तो फिर, सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, इसका क्या परिणाम होता है? खैर, आपने वास्तव में कुछ हल्की असुविधा का अनुभव किया है। आपने अपना जीवन ऐसे तरीके से जिया है जिसका उद्देश्य ईश्वर का आदर करना है।

आपने कुछ प्रलोभनों का प्रतिरोध किया है। आपने, मान लीजिए, यौन रूप से एक स्वच्छंद जीवनशैली से परहेज किया है। आपने, मान लीजिए, हार्ड ड्रग्स या कुछ खास सुखों में अत्यधिक लिप्त होने से परहेज किया है, जिसमें वे समय भी शामिल हैं जब शायद आप ऐसा करना चाहते थे।

और इसलिए आपको असुविधा हुई है, लेकिन केवल मामूली रूप से। आइए इस तथ्य को नज़रअंदाज़ करें कि आप एक निश्चित मात्रा में आत्म-नियंत्रण के साथ जीने से वास्तव में बहुत सारे स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं, जिसके साथ आप अन्यथा नहीं रह सकते। तो, मान लें कि ईश्वर में विश्वास करने से थोड़ी असुविधा होती है, और यह उस धार्मिक आस्तिक के लिए शुद्ध नुकसान है जो गलत साबित होता है।

खैर, अब आइए परिणामों पर विचार करें, अगर हम नास्तिकता के साथ चलते हैं और ईश्वर के अस्तित्व में अविश्वास करते हैं तो दो संभावित परिणाम हो सकते हैं। अगर हम उस मामले में गलत साबित होते हैं, तो परिणाम क्या होगा? खैर, हम अनंत दुख का अनुभव करते हैं। हम परलोक में चले जाते हैं, और चूँकि हमने ईश्वर की अवहेलना की, इसलिए हम नरक में पहुँच जाते हैं और जो कुछ भी उससे जुड़ा है।

यह पता नहीं कब तक चलता रहेगा, शायद हमेशा के लिए, भले ही यह बहुत लंबा समय हो। यह एक भयानक, चरम प्रकार का नुकसान और अत्यधिक दुःख है। लेकिन अगर हम यह नहीं मानते कि ईश्वर मौजूद है और हम सही साबित होते हैं, तो हमें क्या मिला? बस थोड़ा सा अतिरिक्त मज़ा।

फिर भी, इनमें से कुछ नुकसानदेह हो सकते हैं, लेकिन तर्क के लिए मान लेते हैं कि नास्तिक होने और इसके बारे में सही होने से आपको कम से कम थोड़ा सा शुद्ध लाभ तो हुआ होगा। तो, इन दो विकल्पों की तुलना करने पर, आस्तिक होने या नास्तिक होने और प्रत्येक मामले में उसी के अनुसार जीने पर, आप पाते हैं कि यदि आप आस्तिक हैं, तो आपको अनंत लाभ और केवल थोड़ा सा नुकसान होगा, आप जानते हैं, यदि आप क्रमशः सही या गलत हैं। एक नास्तिक के रूप में, सही या गलत होने का मतलब है कि यदि आप सही हैं तो केवल थोड़ा अतिरिक्त मज़ा लेकिन यदि आप गलत हैं तो अनंत या अत्यधिक नुकसान।

तो, यह किसी ऐसे व्यक्ति के समान है जो रेसट्रैक पर जाकर दो घोड़ों की रेस पर दांव लगाता है, और उनमें से एक घोड़े पर एक मिलियन से एक ऑड्स पर दांव लगाता है, और आप उस घोड़े, भगवान घोड़े पर दो डॉलर का दांव लगाकर दो मिलियन डॉलर जीत सकते हैं। यदि वह घोड़ा विजेता के रूप में आता है, तो आप केवल दो डॉलर खो देंगे यदि वह घोड़ा हार जाता है। दूसरे घोड़े पर, आपको दो डॉलर जीतने के लिए एक मिलियन डॉलर का दांव लगाना होगा।

यह नास्तिकता का घोड़ा है। तो, आप उन दो घोड़ों में से किस पर दांव लगाने जा रहे हैं, अगर आप जानते हैं, कि उनके जीतने की संभावना समान है? नास्तिकता के घोड़े पर दांव लगाना मूर्खता होगी। आपको ईश्वर के घोड़े पर दांव लगाना होगा।

आप सिर्फ कुछ डॉलर का दांव लगाकर लाखों डॉलर जीत सकते हैं। तो, पास्कल के अनुसार, यहाँ दांव लगाने का मूल तर्क यही है। यह समझदारी भरा कदम है।

व्यावहारिक रूप से यह तर्कसंगत है कि आप ईश्वर पर दांव लगाएं और इस जीवन में ईश्वर पर विश्वास करें और उसका अनुसरण करें, जो कि संबंधित लाभों को देखते हुए संभव है। अब, कुछ दार्शनिक हैं, विलियम लाइकन और, मुझे लगता है, आर्थर स्लेसिंगर, जिन्होंने लगभग 25 साल पहले एक लेख लिखा था जिसका नाम था आप अपनी ज़िंदगी दांव पर लगाएँ, पास्कल का दांव बचाव किया गया और उन्होंने कई आपत्तियों पर विचार किया और उन पर जवाब दिया, जो मुझे लगता है कि मददगार और व्यावहारिक है। ये आपत्तियाँ पास्कल के दांव के बारे में काफी सामान्य शिकायतें हैं।

उनमें से एक यह है कि मेरी मान्यताएँ मेरे नियंत्रण में नहीं हैं। मैं किसी चीज़ पर यँ ही विश्वास करने का फैसला नहीं कर सकता। अगर मैं आपसे कहता हूँ कि मैं आपको दस लाख डॉलर दूँगा, अगर आप अभी यह मान लें कि मैं हाथ नहीं उठा रहा हूँ, भले ही आपके पास इसके विपरीत मानने के लिए दस लाख डॉलर का प्रोत्साहन हो, तो आप खुद को इस बात पर अविश्वास करने के लिए नहीं ला सकते कि मैं हाथ उठा रहा हूँ जबकि मैं वास्तव में ऐसा कर रहा हूँ और आप इसे देख रहे हैं।

इसलिए, उस विश्वास पर आपका कोई नियंत्रण नहीं है। यह आपके अंदर कई अन्य चीज़ों की तरह बनता है, जिन पर हम विश्वास करते हैं। हम खुद को अपनी इच्छा से स्वतंत्र रूप से विश्वास करते हुए पाते हैं।

कभी-कभी हम कहते हैं, ठीक है, मैं इस पर विश्वास करना चाहता हूँ, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि सबूत इसके खिलाफ हैं। और यह इस तथ्य को स्वीकार करने जैसा है कि हमारे विश्वास हमारे नियंत्रण में नहीं हैं। और क्या पास्कल हमें एक निश्चित तरीके से अपने विश्वासों को नियंत्रित करने के लिए नहीं कह रहा है? और क्या यह असंभव नहीं है? तो, यह अनुचित है।

खैर, लाइकन और श्लेसिंगर बताते हैं कि लंबे समय में, हमारी मान्यताएँ, कम से कम, हमारी कई मान्यताएँ हैं, और पास्कल और अन्य और लाइकन और श्लेसिंगर कहेंगे कि ईश्वर में विश्वास भी कुछ ऐसा है जो हमारे नियंत्रण के अधीन है। हम व्यवहार चिकित्सा कहलाने वाली चीज़ का उपयोग कर सकते हैं, जैसा कि विलियम जेम्स ने प्रस्तावित किया था। यह एक तरह का पैराफ्रेज़ है, लेकिन एक बिंदु पर, जेम्स ने धार्मिक विश्वास का जिक्र करते हुए कहा, चर्च जाओ, सामूहिक प्रार्थना करो, शास्त्र पढ़ो, और देखो, ईमानदारी से विश्वास आएगा और आपकी शंकाओं को स्तब्ध कर देगा।

आखिरकार, आप यकीन कर ही लेंगे। इसलिए, भले ही मैं अभी अपनी खास मान्यता को बदल नहीं सकता, मान लीजिए कि मेरे बगल में बैठा व्यक्ति हरे रंग की शर्ट पहने हुए है। मैं उसे बदल नहीं सकता।

मैं समय के साथ-साथ सभी तरह के विश्वासों पर कुछ खास रुझान बदल सकता हूँ। तो, मान लीजिए कि मैं आपको बताता हूँ कि अब से एक साल बाद, मैं किसी ऐसे व्यक्ति को \$50,000 देने जा रहा हूँ जिसे मैं जानता हूँ कि वह जैज़ संगीत का बहुत ही समर्पित प्रेमी है। मान लीजिए कि आपको जैज़ पसंद नहीं है।

आप क्लासिक रॉक या कंट्री म्यूजिक में ज़्यादा रुचि रखते हैं। आप जैज़ में रुचि नहीं रखते, लेकिन अगर आपने यह प्रस्ताव सुना है, तो मैं अगले साल इस समय किसी को भी \$50,000 देने जा रहा हूँ, अगर वे ईमानदारी से कह सकें कि उन्हें जैज़ में वाकई रुचि है और उन्हें जैज़ पसंद है। आप क्या कर सकते हैं? शायद बाहर जाएँ और डेव ब्रूबेक और जॉन कोलट्रैन और माइल्स डेविस और सभी तरह के बेहतरीन जैज़ संगीत खरीदना शुरू करें और जैज़ के बारे में सुनना और सीखना शुरू करें, जैज़ के बारे में किताबें पढ़ें, सभी तरह के जैज़ क्लासिक्स सुनें और इसके लिए एक ऐसा स्वाद विकसित करें कि अब से एक साल बाद, आप ईमानदारी से कह सकें, हाँ, मुझे वास्तव में जैज़ पसंद है।

पहले तो मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन जितना मैंने इसके बारे में जाना, उतना ही मैंने सुना, जिससे मुझमें असली रुचि पैदा हुई, और अब मैं ईमानदारी से कह सकता हूँ कि मुझे जैज़ पसंद है। मैं अब \$50,000 का चेक ले लूँगा, कृपया। यह एक तरह की व्यवहार चिकित्सा होगी जो लाइकन और श्लेसिंगर द्वारा सुझाई गई चीज़ के समान होगी।

चर्च जाना शुरू करें, धर्मग्रंथों को पढ़ें, ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू करें जो वहां हो सकता है, भले ही आप अनिश्चित हों, और देखें कि क्या वास्तविक विश्वास बनना शुरू नहीं होता है। तो, इस तरह, ईश्वर के बारे में आपकी मान्यताएँ अप्रत्यक्ष रूप से आपके नियंत्रण में हो सकती हैं, भले ही वे ऐसी चीज़ न हों जिन्हें आप एक पल की सूचना पर बदल सकें। एक और आपत्ति यह है कि दांव

निंदनीय और स्वार्थी है, कि ईश्वर न्याय के दिन किसी को पुरस्कृत नहीं करेगा यदि उनका विश्वास और उनके प्रति प्रतिबद्धता केवल एक साधारण दांव और ईश्वर के लिए वास्तविक प्रेम के बजाय एक सुखद शाश्वत अस्तित्व पाने की स्वार्थी इच्छा पर आधारित है।

लाइकन और श्लेसिंगर इस बात को उसी तरह से संबोधित करते हैं जिस तरह से उन्होंने पिछली आपत्ति को संभाला था, कि जब बात विश्वास की आती है तो हम अपने मूल स्वभाव से कहीं अधिक ईमानदार बन सकते हैं। वे कहते हैं कि अंततः आप अपनी निराशावादिता को छोड़ देंगे, कम से कम जितना संभव हो सके, और एक अधिक ईमानदार आस्तिक बन जाएंगे, जहां यह केवल उस शाश्वत भुगतान को पाने के बारे में नहीं है। आप वास्तव में ईमानदारी से भगवान से प्यार करते हैं और भगवान के आभारी हैं क्योंकि अब आप वास्तव में विश्वास करते हैं कि वह वहाँ है और उसने आपको वह जीवन दिया है जो आपके पास है और सभी प्रकार के आशीर्वाद दिए हैं।

तो इस तरह से उन्होंने उस आपत्ति को संभाला। दूसरी आपत्ति यह है कि जिस तरह से पास्कल ने 50% संभावना के संदर्भ में इसे प्रस्तुत किया है, या यह काफी हद तक समान रूप से संभावित है, वह यह नहीं है कि ईश्वर मौजूद है, यह वास्तविक स्थिति को नहीं दर्शाता है। सबूत वास्तव में नहीं है, आप जानते हैं, यह एक समान संभावना नहीं है।

यह अधिक संभावना है कि ईश्वर नहीं है। वास्तव में, कई लोग कहेंगे कि नास्तिकता के सत्य होने की अत्यधिक संभावना है। कुछ संशयवादियों के अनुसार, शायद आस्तिकता के सत्य होने की संभावना केवल 10 या 15% है।

इससे इस तर्क पर क्या असर पड़ता है? लाइकन और श्लेसिंगर कहते हैं कि इससे चीजें नहीं बदलतीं क्योंकि हम यहां अनंत भुगतान के बारे में बात कर रहे हैं। तो फिर से, दो घोड़ों की दौड़ के बारे में सोचें। हो सकता है कि एक घोड़ा 10 से 1 के अंतर पर जा रहा हो।

या फिर मैं इसे बदल दूँ। हो सकता है कि एक घोड़ा दूसरे घोड़े से काफी तेज़ हो। अगर ऐसा है भी, तो शायद नास्तिकता वाला घोड़ा कमज़ोर हो या इस मामले में कौशल या गति के मामले में कमज़ोर हो।

हो सकता है कि जाँकी नास्तिक घोड़े जितना अच्छा न हो। आप फिर भी ईश्वर के घोड़े पर दांव लगाना चाहेंगे क्योंकि भुगतान एक मिलियन डॉलर होने वाला है। इसलिए भले ही वह धीमा घोड़ा हो, और इस मामले में, यह आस्तिकता के पक्ष में कम सबूतों के कारण होगा, फिर भी आप उस पर दांव लगाएंगे क्योंकि अगर वह घोड़ा जीतता है, तो भुगतान बहुत अधिक होगा।

और फिर कई देवताओं की आपत्ति है। असंख्य संभावित देवता हैं। हम कैसे जान सकते हैं कि कौन सा देवता हज़ारों अन्य देवताओं से ज़्यादा संभावित है? तो आपके पास ये सभी अलग-अलग विश्व धर्म हैं, 10 या 12 प्रमुख विश्व धर्म, और फिर सभी प्रकार के छोटे-मोटे संप्रदाय।

हम किस धार्मिक परंपरा को अपनाना चाहते हैं या किससे खुद को जोड़ना चाहते हैं? लाइकन और श्लेसिंगर का सुझाव है कि हमें यहाँ कई कारकों पर विचार करना चाहिए। हम निश्चित रूप

से अनुभवजन्य, विशेष रूप से ऐतिहासिक, विचारों पर विचार कर सकते हैं जो कुछ धार्मिक परंपराओं को, आप जानते हैं, वस्तुनिष्ठ रूप से कम सम्माननीय या जिनके भगवान के वास्तविक होने की संभावना कम है, खारिज कर सकते हैं। तो शायद यह हमारे गंभीर विकल्पों को केवल कुछ प्रमुख धार्मिक परंपराओं तक सीमित कर सकता है।

इसके अलावा, वे संबंधित भुगतानों के विवरण को देखने की सलाह देते हैं। कुछ धार्मिक परंपराओं के अनुसार, जीवन के बाद का जीवन जरूरी नहीं है, जैसे कि कम से कम बौद्ध धर्म के कुछ रूपों में।

हमें सहिष्णुता पर भी विचार करना चाहिए। कुछ धार्मिक परंपराएँ समावेशी या बहुलवादी हैं, जैसे हिंदू धर्म, जो धार्मिक पालन की विश्वास प्रतिबद्धताओं के संदर्भ में अत्यधिक सहिष्णु है। जबकि इस्लाम और ईसाई धर्म जैसी कुछ अन्य धार्मिक परंपराएँ इस बात के संदर्भ में बहुत अधिक असहिष्णु हैं कि कौन स्वर्ग जाएगा, आप जानते हैं, यह उनके विश्वासों पर निर्भर करता है।

इसलिए ये वे हैं जिन पर हमें सबसे ज़्यादा ध्यान देने और उन्हें सबसे ज़्यादा गंभीरता से लेने की ज़रूरत होगी। इसलिए, हम इसे ईश्वरवाद के कुछ प्रमुख रूपों तक सीमित कर सकते हैं। लेकिन किसी भी मामले में, कुछ धार्मिक परंपराओं तक सीमित रहें और फिर वहाँ से अपना चुनाव करें।

या शायद हम सांस्कृतिक रूप से खुद को जिस जगह पाते हैं या जिस धार्मिक परंपरा में हम पले-बढ़े हैं, उसके आधार पर यह चुनाव करें। तो इस बारे में सोचें, यह भी अपने आप में एक तरह का दांव लगाने वाला है, कि आप आस्तिक परंपराओं में से कौन सी परंपरा चुनते हैं। आप जानते हैं, उन परंपराओं में से जो भटकावपूर्ण विश्वास के प्रति सबसे अधिक असहिष्णु हैं।

तो यह पास्कल का दांव है, और लाइकन और श्लेसिंगर द्वारा विचार किए गए इसके पक्ष और विपक्ष में कुछ तर्क हैं। अब आगे बढ़ते हैं जिसे विश्वास करने की इच्छा कहा जाता है, जैसा कि विलियम जेम्स कहते हैं। धार्मिक विश्वास की व्यावहारिकता के सवाल पर यह एक दिलचस्प दृष्टिकोण है।

विलियम जेम्स का जीवन मुख्यतः 19वीं सदी के अंत में बीता। उन्होंने वास्तव में एक चिकित्सक के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त किया था और मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक अग्रणी विद्वान बने। उन्होंने दो खंड लिखे, प्रिंसिपल्स ऑफ एथिक्स, जो दशकों तक मनोविज्ञान में एक मानक पाठ था।

और जैसे-जैसे उनका विद्वत्तापूर्ण करियर आगे बढ़ा, धार्मिक अध्ययनों में उनकी रुचि बढ़ती गई। और उन्होंने धार्मिक अनुभवों की विविधताओं पर गिफर्ड व्याख्यान दिए, मुझे लगता है कि लगभग 1900 या 1901 में, जिन्हें इसी शीर्षक से एक पुस्तक में संकलित किया गया था। और यह धार्मिक अनुभव पर अब तक पढ़ी गई सबसे अच्छी, सबसे आकर्षक, दिलचस्प पुस्तक है।

यह इस क्षेत्र में एक मानक है। लेकिन वह धार्मिक विश्वास के प्रति अधिक से अधिक सहानुभूतिपूर्ण हो गया, भले ही वह मूल रूप से एक बहुत ही कठोर अनुभववादी था। वह धार्मिक विश्वासों के प्रति अधिक से अधिक सहानुभूतिपूर्ण हो गया।

अपने गिफर्ड व्याख्यानों के लिए इन व्याख्यानों को विकसित करने में उन्होंने जो काम किया, वह धार्मिक विश्वास के प्रति अधिक सहानुभूति विकसित करने में उनके लिए महत्वपूर्ण था। लेकिन एक निबंध में, जिसे उन्होंने पहले द विल टू बिलीव नाम से लिखा था, उन्होंने इस तथ्य के बारे में बात की कि जब विश्वासों के निर्माण की बात आती है तो साक्ष्य की समीक्षा में केवल तर्क ही शामिल नहीं होता है। ऐसा भी नहीं है कि इसमें केवल तर्क ही शामिल होना चाहिए।

इच्छाशक्ति शामिल है और कई मामलों में हम जो मानते हैं उसके संदर्भ में शामिल होनी चाहिए। इसलिए, वह हमारे द्वारा किए जाने वाले विकल्पों की प्रकृति के बारे में कुछ भेद करता है। वह कहता है कि चुनाव जीवित या मृत हो सकता है।

आप जीवित या मृत विकल्पों के बीच अंतर कर सकते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि विकल्पों का कोई विशेष सेट चुनने वाले के लिए भावनात्मक अपील करता है या नहीं। कोई विकल्प मजबूरी में लिया जा सकता है या टाला जा सकता है। यहाँ, वह इस बारे में बात कर रहे हैं कि क्या विकल्प को टाला जा सकता है या बिल्कुल भी न चुनकर टाला जा सकता है।

कोई पूछता है कि क्या आप मिठाई के लिए केक या पाई पसंद करेंगे। मुझे मिठाई नहीं चाहिए। तो यह कोई मजबूरी वाला विकल्प नहीं है। यह एक टालने योग्य विकल्प है।

चुनाव महत्वपूर्ण या तुच्छ हो सकते हैं, और यह इस बात पर निर्भर करता है कि दिया गया विकल्प महत्वपूर्ण है या नहीं। हममें से ज्यादातर लोगों के लिए यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण विकल्प है और हम घर खरीदने जा रहे हैं या नहीं। हालाँकि, यह वास्तव में कोई महत्वपूर्ण विकल्प नहीं है कि हम खरीदे गए घर में अपने बेडरूम को किस रंग से रंगेंगे।

तो अब, आइए धार्मिक परिकल्पना या ईश्वर में विश्वास के बारे में पूछें। यह किस तरह का विकल्प है? धार्मिक परिकल्पना हमारे सामने किस तरह के विकल्प प्रस्तुत करती है? खैर, जब ईश्वर में विश्वास की बात आती है, तो इसमें निश्चित रूप से भावनात्मक अपील होती है। ईश्वर का अस्तित्व है या नहीं, यह हम सभी के लिए मायने रखता है।

यह बहुत महत्वपूर्ण है जब आप इस बात के निहितार्थों के बारे में सोचते हैं कि क्या ईश्वर हम में से प्रत्येक के जीवन में मौजूद है। यह बहुत महत्वपूर्ण है। यह कोई मामूली बात नहीं है।

और तीसरा, यह एक मजबूरी भरा विकल्प है। ईश्वर के बारे में कोई निर्णय न लेने का एक मजबूरी भरा निर्णय या विकल्प, एक तरह से, निर्णय लेना है। सवाल को टालना मूल रूप से अज्ञेयवाद या शायद नास्तिकता की स्थिति में रहना है।

संशयवादी होना धार्मिक विश्वास के विरुद्ध रहना है। इसलिए, धार्मिक परिकल्पना जीवंत है, यह थोपी हुई है, और यह महत्वपूर्ण है। लेकिन अगर सबूत अनिर्णायक लगते हैं तो हम क्या करें?

क्या होगा अगर सबूत हमें एक दिशा या दूसरी दिशा में निश्चित रूप से नहीं ले जाते हैं? या तो धार्मिक प्रतिबद्धता की ओर या उससे दूर।

हम क्या करते हैं? वहाँ, जेम्स कहते हैं कि हमारा भावुक स्वभाव न केवल वैधानिक रूप से बल्कि प्रस्तावों के बीच एक विकल्प तय करना चाहिए जब भी यह एक वास्तविक विकल्प होता है जिसे इसकी प्रकृति से बौद्धिक आधार पर तय नहीं किया जा सकता है। इसलिए, हमारा भावुक स्वभाव निर्णय ले सकता है और उसे निर्णय लेना भी चाहिए। और जेम्स के अनुसार, यह उचित है, जब धार्मिक परिकल्पना जैसे विकल्पों की बात आती है जो जीवित, मजबूर और महत्वपूर्ण हैं।

कुछ लोग इस पर आपत्ति करते हैं, लेकिन क्या हमें केवल उन्हीं सत्यों पर अपनी सहमति नहीं देनी चाहिए जो निर्णायक रूप से तर्कों द्वारा समर्थित हों? और यही वह आपत्ति होगी जिसे विलियम क्लिफोर्ड और उनके जैसे लोग विलियम जेम्स के खिलाफ यहाँ उठाएँगे। केवल उन्हीं सत्यों पर सहमति दी जानी चाहिए जो निर्णायक रूप से साक्ष्य द्वारा समर्थित हों। हमें हमेशा केवल उन्हीं बातों पर विश्वास करना चाहिए जो पर्याप्त साक्ष्य द्वारा समर्थित हों।

क्लिफोर्ड के सिद्धांत के बारे में हमने बात की। जेम्स का जवाब यहाँ यह है कि सोचने का एक नियम मुझे कुछ प्रकार के सत्यों को स्वीकार करने से पूरी तरह से रोक देगा। अगर वे सत्य सत्य होते, तो एक तर्कहीन नियम होता। अगर हम सत्य की खोज के बारे में बात कर रहे हैं, तो सत्य की खोज के लिए हमारे दिशा-निर्देश ऐसे नहीं हो सकते कि अगर हम उन दिशा-निर्देशों का पालन करें, तो हम कुछ सत्यों के प्रति अंधे हो जाएँगे।

तो यही वह बात है जिसके बारे में वह यहाँ बात कर रहे हैं। और चूँकि हमारे पास कुछ सत्य हैं जो हमारे मानव स्वभाव और हमारे सीमित दायरे के कारण हैं, इसलिए हमारे पास, भले ही वे वास्तविक सत्य हों, उन पर विश्वास करने के लिए हमारे पास कभी भी पर्याप्त सबूत नहीं होंगे। फिर, यह सुझाव देता है कि कुछ मामलों में पर्याप्त सबूत के बिना विश्वास करना ठीक होना चाहिए।

तो यही जेम्स की बात है। यहाँ सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आस्था अपरिहार्य है। चाहे वह आस्था धार्मिक हो या न हो, ऐसी कई चीजें हैं जिन पर हम बुनियादी तौर पर विश्वास करते हैं, जैसे आस्था प्रतिबद्धताएँ, और उनके लिए कोई निर्णायक सबूत नहीं है।

हमारे पास इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं हैं कि हर प्रभाव का एक कारण होता है। यह कार्य-कारण के नियम में एक बुनियादी विश्वास है। 18वीं सदी के दार्शनिक डेविड ह्यूम ने निर्णायक रूप से प्रदर्शित किया कि हम यह साबित नहीं कर सकते या हमारे पास यह मानने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं हैं कि हर प्रभाव अनिवार्य रूप से अपने कारण से जुड़ा होता है।

ह्यूम का निष्कर्ष यह है कि हम कार्य-कारण में, कारणों और प्रभावों के बीच आवश्यक संबंधों में, या जो कुछ भी हम कार्य-कारण के बारे में मानते हैं, वह पशुवत आस्था के आधार पर है, निर्णायक साक्ष्य के आधार पर नहीं। उन्होंने प्रकृति की एकरूपता में विश्वास के बारे में भी बात की, कि कल सूरज उगेगा। हम सभी मानते हैं कि कल सूरज उगेगा, कि कल भी होगा।

हम सभी इस बात पर विश्वास करते हैं, लेकिन हमारे पास इसके लिए निर्णायक सबूत नहीं हैं। न ही हमारे पास इस बात के लिए निर्णायक सबूत हैं कि कोई व्यक्ति अभी जाग रहा है और सपना नहीं देख रहा है। आप कैसे जानते हैं कि बाहरी दुनिया वास्तव में मौजूद है, कि आपकी इंद्रियाँ आम तौर पर आपको यह बताने में विश्वसनीय हैं कि एक बाहरी दुनिया है और आप अभी जाग रहे हैं? ये विश्वास के लेख हैं।

हम यह मानकर चलते हैं कि किसी भी समय हम जाग रहे हैं, कि हम जाग रहे हैं, और हम कोई बहुत स्पष्ट सपना नहीं देख रहे हैं। कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, मैं अंतर बता सकता हूँ क्योंकि यह बहुत अधिक स्पष्ट और स्पष्ट है। ठीक है, ऐसा ही वह दुःस्वप्न था जो आपने कल रात देखा था, और आप ठंडे पसीने में जाग गए क्योंकि आप बहुत डरे हुए थे क्योंकि आप सपना देख रहे थे कि कोई घुसपैठिया घर में घुस आया है और आपको और आपके परिवार को धमका रहा है।

आपको इस बात से बहुत राहत मिली कि यह एक सपना था। उस सपने के संदर्भ में, आपको पूरा यकीन था कि यह सच था। आप इतने भयभीत नहीं होते।

तो यह भी आस्था का एक लेख है। हमारा मानना है कि दूसरे लोगों के पास भी दिमाग है, उनके अपने विचार और भावनाएँ हैं, ठीक वैसे ही जैसे हमारे पास हैं। आप मानते हैं कि दूसरे लोगों के पास भी आपके जैसे विचार और भावनाएँ हैं, जबकि आप कभी उनके दिमाग में नहीं गए हैं।

आपने कभी भी वह अनुभव नहीं किया जो उन्होंने अनुभव किया है, यह मानते हुए कि उनके अपने निजी अनुभव हैं। यह मानते हुए कि हममें से बाकी सभी लोग ऑटोमेटन नहीं हैं जिन्हें कुछ खास तरीकों से आपको जवाब देने के लिए प्रोग्राम किया गया है। केवल वही विचार और भावनाएँ जो आपने कभी सीधे अनुभव की हैं, वे आपकी अपनी हैं।

जब दूसरे लोगों के विचारों और भावनाओं की बात आती है, तो आप मान लेते हैं कि वे वास्तविक हैं। शायद आप कहें, ठीक है, मेरे पास इस पर विश्वास करने के लिए एक सादृश्यात्मक आधार है क्योंकि मेरे अपने विचार और भावनाएँ मेरे अपने व्यवहार से इस तरह जुड़ी हुई हैं कि यह सुझाव देता है कि दूसरे लोगों के अपने विचार और भावनाएँ हैं क्योंकि उनका व्यवहार भी वैसा ही है। लेकिन आप एक मामले से लेकर आठ अरब मामलों तक तर्क कर रहे हैं, और यह एक बहुत ही खराब प्रेरक तर्क है।

और फिर भी अन्य मन के लिए सादृश्यात्मक तर्क उपलब्ध सबसे मजबूत प्रतीत होता है, चाहे वह कितना भी बुरा क्यों न हो। इसलिए, यह दर्शन के क्षेत्र में कुछ हद तक एक गलती है जिसे कोई भी निर्णायक रूप से साबित नहीं कर पाया है। कोई भी निर्णायक रूप से यह प्रदर्शित नहीं कर पाया है कि किसी के अपने मन के अलावा अन्य मन भी हैं। यह विश्वास का एक लेख है।

यहाँ पर यही बात है, कि आपमें आस्था के प्रति बहुत ज़्यादा प्रतिबद्धता है। चाहे आप धार्मिक विश्वास रखते हों या नहीं, अगर आप एक कट्टर नास्तिक हैं जो कहता है, नहीं, मैं केवल इंद्रिय अनुभव के आधार पर विश्वास करता हूँ, मैं ईश्वर या किसी अलौकिक चीज़ पर विश्वास नहीं करता, तो मैं आस्थावान व्यक्ति नहीं हूँ। सच तो यह है कि आप आस्थावान व्यक्ति हैं क्योंकि आप आस्था के आधार पर मानते हैं कि प्रभावों के कारण होते हैं, कि प्रकृति एक समान है, कि सूरज कल

उगेगा, प्रकृति के नियम भविष्य में भी वैसे ही लागू रहेंगे जैसे कि अतीत में थे, कि आपकी इंद्रियाँ आम तौर पर विश्वसनीय हैं, कि आप अभी जाग रहे हैं और सपने नहीं देख रहे हैं, और कि दूसरे लोगों के पास दिमाग है।

ये सभी आस्था प्रतिबद्धताएं हैं। इसलिए, आप आस्था से बच नहीं सकते। और मुझे लगता है कि यही वह चीज है जिससे विलियम जेम्स को यह अहसास हुआ कि भले ही वह शुरुआत में एक तरह का कट्टर अनुभववादी बनना चाहता था, लेकिन आप आस्था प्रतिबद्धताओं से बच नहीं सकते, उन चीजों पर विश्वास करना जिन्हें हम वैज्ञानिक रूप से या अन्यथा साबित नहीं कर सकते।

ऐसा लगता है कि आस्था मानवीय स्थिति का एक बुनियादी हिस्सा है, और हम ऐसे प्राणी हैं जो आस्था के प्रति प्रतिबद्धता रखने के लिए बाध्य हैं। दुनिया में आगे बढ़ने के लिए भी, आपको आस्थावान व्यक्ति होना चाहिए। तो क्यों न ईश्वर में आस्था को एक और आस्था प्रतिबद्धता के रूप में गंभीरता से लिया जाए जिसे कोई भी व्यक्ति कर सकता है और जिसके बहुत व्यावहारिक लाभ हैं?

तो यह विश्वास के व्यावहारिक औचित्य पर हमारी चर्चा है।

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 5, आस्तिक तर्क, भाग 4, आस्तिक विश्वास का व्यावहारिक औचित्य है।